मोटापे के मापदंडों का पुनर्मूल्यांकन

[स्रोत: हिंदुस्तान टाइम्स]

मोटापे के निदान के क्रम में बॉडी मास इंडेक्स (BMI) पर लंबे समय से चली आ रही निर्भरता पर इसकी सीमाओं के कारण सवाल उठ रहे हैं।

- BMI द्वारा एथलीटों जैसे **मस्कुलर व्यक्तियों** में मोटापे को **अधिक करके आँका** जा सकता है तथा अत्यधिक वसा लेकिन **कम मांसपेशी द्रव्यमान वाले व्यक्तियों में मोटापे को कम आँका** जा सकता है।
- **लैंसेट** ने **कमर का आयाम**, **कमर-कूल्हे का अनुपात** और **कमर-लंबाई अनुपात** जैसे वैकल्पिक मापदंडों का उपयोग करने की सिफारिश की है, जिससे **लिंग, आयु और नृजातीयता** के अंतर पर विचार हो सके।
  - मोटापे को **प्री-क्लीनिकल (कोई अंग विकार नहीं)** एवं **क्लीनिकल** (**अंग विकार** और क्रियाशीलता हानि के साथ) के रूप में वर्गीकृत किया जाना चाहिये।
- **BMI** का उपयोग **यह आकलन करने के लिये** किया जाता है कि किसी व्यक्ति के **शरीर का वजन** किसी निश्चित **लंबाई हेतु उचित है या नहीं**। इसकी गणना व्यक्ति के वजन और लंबाई का उपयोग करके की जाती है।
- **भारत में मोटापा: द लैंसेट** के अनुसार, भारत की 70% **शहरी आबादी मोटापे या अधिक वजन** की श्रेणी में शामिल है ।
  - **भारत,** मोटापे से ग्रस्त व्यक्तियों की **सर्वाधिक संख्या** वाले शीर्ष 10 देशों की सूची में **अमेरिका तथा चीन** के बाद **तीसरे स्थान** पर है।
  - मोटापा एक ऐसी स्वास्थ्य स्थिति है जब **शरीर में अत्यधिक वसा** का संचय हो जाता है।

और पढ़ें: भारत में बढ़ता मोटापा

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/reevaluating-obesity-metrics